JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नारी संधर्ष और विकास: कुछेक महिला साहित्यकार लेखनी माध्यम

Smti. Nita Samadder, PhD Scholar & UGC NET

नारी की विकास के ओर बढ़ते कदमों को संधर्ष की विविध पहलुओं को मैंने कुछेक महिला साहित्य लेखन के माध्यम से चित्रित किया है । इन्हीं महिला लेखिकाओं ने हिंदी साहित्य को एक नई दिशा दिया है। वर्तमान शोध को नारी विकास के गंभीर विषयों के मूल्यांकन के प्रेरणा स्रोत से ही किया गया है। युग के सुरूवाती समाज, नारी- पुरुष की समानता के सिद्धांत पर आधारित है। यदि प्रश्न नारी क्षमता का हो तो, समाज नारी की क्षमता को सदैव ही पुरूषों की अपेक्षा कम आंका जाता रहा है। उसकी शारीरिक शक्ति ही नहीं बल्कि उसकी बौद्धिक क्षमता पर भी संदेह किया जाता है। हमारा समाज तो पुरुष प्रधान है, इस पुरुष प्रधान समाज की एक मान्यता यह है कि नारी तो केवल घर के लिए ही जन्मीं है। वह घरेलू कार्यों में तो योग्य, परन्तु घर के बाहर के कार्यों में अयोग्य। हमारे समाज की स्त्रीया बंदीशो से घिरीं बंद समाज घिरीं समस्याओं से जूझती रहतीं है। समाज में स्त्रीया सपूर्ण जीवन भिन्न- भिन्न पीड़ा, उत्पीड़न एंव संघर्षों से लड़ते अपना जीवन व्यतीत करतीं हैं। चाहे, वह किसी भी जाति या वर्ग की हो । समाज की यहीं दकियानूसी धारणा नारी विकास पर बाधा डालते हैं। इन बाधाओं को दूर कर, नारी विकास को बढ़ावा देने के लिए समाज में अदृश्य हुई सच्चाई, अशिक्षा, घरेलू हिंसा, नारी शोषण, समानता का अधिकार सभी अंधविश्वासों को सामने लाकर नारी को सशक्तिकरण कर सकते हैं। समाज को पुरुष प्रधान बनाए रखने के लिए अनवरत नारी का उत्पीड़न तथा शोषण किया जाता रहा है। जिससे उसे दबाएं रखा जाए, ताकि वहा अपनी उन्नति के बारे में सोचे तक नहीं, परन्तु पाश्चात्य सभ्यता, वैज्ञानिक शोध, आधुनिकता का आगमन, देश में लोकतंत्रीय प्रणाली, मानवतावादी सिद्धांतों नारी स्वंतत्रता, नारीवाद, नारी सशक्तिकरण सिद्धांतों स्थापना के हेतु उस को अपनी उत्थान का पथ मिला है । आज समाज की संघर्ष से जूझते हुएं नारी पुरुष के समकक्ष खड़ीं हो गई है। संविधान में स्त्रियों को समानता कि अधिकार प्रदान कर, हर प्रकार के पांखड , दिखावा, छल-कपट, शोषण, लिंग-भेद को समाप्त कर एक नई समाज की स्थापना करने में वचनबद्ध है।

समकालीन आधुनिक नारी अपनी बौद्धिकता का परिचय देते हुए हिंदी साहित्य लेखक में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। वह देश और समाज के प्रति क्या सोच रखती है उसे लेखों के माध्यम से समाज के सम्मुख यथार्थ चित्रण को प्रकट करती है। साहित्य का जनसमुदाय पर काफी प्रभाव पड़ता है। इसके प्रभाव को नजरअंदाज ना करते हुए सहित्य के माध्यम से वह समाज की विभिन्न दृष्टिकोण जैसे अपने अपनी आकांक्षाएँ, शिक्षा का अधिकार, मान्यताएँ, स्वंतत्रता, शोषण से मुक्त, देश की उन्नति में योगदान तथा हर तरफ के रूढ़िवादी विचारों के विरुद्ध अपनी आवाज़ को लेख

के ज़रिए से समाज के सम्मुख चित्रांकित करतीं हैं। इस कार्य के लिए उसे सामाजिक विसंगतियों का शोषण भी सहन करना पड़ता, पर वह ना ही झुकती है ना हारती है। वस्तुत: आदिकालीन समाज में नारी के पूज्यनीय माना जाता था । उसके आदर्श भी उचा रखा गया-

" ***यत्र नार्यस्त पूज्यंते, तंत्र बसते देवता।*** "

इस सघर्ष मे महिला साहित्य लेखन मे सबसे श्रेष्ठ नाम प्राचीन कवियत्री *"मीराबाई (१४९८-१५७३) है/* वह सोलहवीं शताब्दी की एक कृष्ण भक्त और आध्यात्मिक हिन्दू कवयित्री थी । उन्होंने नारी उत्पीड़न के विरुद्ध आवाज़ उठाई और संत- संगति में समानता का दर्जा प्राप्त किया । मीराबाई एक उच्च राजघरानें के पुत्री तथा पुत्रवधु थी । तत्कालीन समाज में उन्हें विद्रोहीनी माना गया क्योंकि उनके धार्मिक कार्य-क्रम किसी राजकन्या या विधवा के लिए स्थापित परंपरागत नियमों के अनुकूल नहीं थे । नियम अनुसार पति के मृत्यु के बाद उन्हें पति के सती होना था परन्तु वह ऐसा ना करते हुए सपूर्ण जीवन कृष्ण भक्ति, साधु- संतों व तीर्थ यात्रियों से मिलावट एवं भक्ति पदों की रचना करने में व्यतीत कर दि । वे क्षत्रिय समाज से विद्रोह कर, स्वंतत्रता और समानता को स्वीकार किया। मीरा ने वैधव्य जीवन न जीकर कृष्ण को प्रतीक स्वरूप अपना पति स्वीकार किया और उनकी भक्ति में रमकर धीरे- धीरे वो संसार से विरक्त हो गयी और साधु- संतों की संगति में संत समाज का हिस्सा बन गई । उनकी मध्यकालीन नारी विवशता को भी व्यक्त किया एक क्रांतिकारी कवियत्री के रूप मे उभरकर सामने आती है-

"हे री मैं तो प्रेम दिवाली,
मेरा दर्द न जार्य कोय ।
राणा से न्याय विष का प्यालाप्याला
मेरो तो गिरधर गोपाल... "

इस विशिष्ट श्रेणी में दूसरा नाम महादेवी वर्मा (१९०७- १९८७) गनना हिंदी कविता के छायावादी युग के चार श्रेष्ठ स्तंभों में से एक है। उन्हें आधुनिक काल की मीराबाई भी कहा जाता है। उनकी काव्य का मूल्य स्वर विषाद और वेदना है। वे साहित्य जगत में नारी सशक्तिकरण का प्रतीक रूप है। वे अपनी कविता मे महिलाओं के प्रति संवेदना से सनी कविताएँ लिखती थी। इनकी यहीं नारी की पीड़ा को " *नीर भरी बदली* "के रूप मे प्रस्तुत किया-

" मै नीर भरी दुख की बदली
परिचय इतना इतिहास यही,
उमड़ी कल थी मिट आज चली । "

उनकी कृति " यामा " के लिए उन्हें साहित्य के सर्वोच्च सम्मान ज्ञानपीठ पुरूस्कार से भी सम्मानित किया गया है। उन्होंने ने संवेदना की जगह स्वंयवेदना को अपने शब्दों में पिरोया या अपने मन के भाव को खुद आकर दिया। उनके साहित्य में प्रेम वेदना, करूणा की प्रमुखतः और नारी सुलभ सात्विकता मिलती है। उनके प्रणय गीत में वेदना और पीड़ा में पीरोया गीत प्राप्त होता है-

" *तुमको पीड़ा में ढूंढा,*
***अब तुममें ढूंढंगी पीड़ा।* "**

महादेवी ने सफेद वस्त्र पहन कर सन्यासी की जीवन व्यतीत किया । इनके जीवन की अनुभाव इनकी रचनाओं में देखा जा सकता है। जिसमें पीड़ा, सामाजिक बंधनों की उत्पीड़ना, सवेदंना की अधिकता कर्मक्षेत्र की गहनता और अवसान आध्यात्मिक आकाश का दर्द भी महसूस किया जाता है।

" ***वीन भी मैं हूँ,तुम्हारी रागिनी भी हूँ ।***
दूर हूँ तुमसे,अखण्ड सुहासिनी भी हूँ।"

इसी श्रेणी में तीसरा नाम सुप्रभात सुभद्रा कुमारी चौहान है। सुभद्रा कुमारी चौहान (१६ अगस्त १९०४- १५ फरवरी १९४८) में हिंदी साहित्य जगह की सुप्रसिद्ध कवयित्री, लेखिका और स्वतंत्रता सेनानी थी । उसकी देश प्रेम से कौन नहीं परिचित हैं। वे महात्मा गांधी जी के नेत्रित्व मे देश में चल रही असहयोग आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और जिसके कारण उन्हें जेल की यातनाएँ सहनी पढ़ी, इन्हें अपनी अनुभूतियों को कहानी में भी व्यक्त किया। अल्पायु आयु में ही उनकी पहली कविता प्रकाशित हुई थीं । उनकी दो कविता संग्रह मुकुल और त्रिधार प्रकाशित हुआ। उन्होंने साहित्य के 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झासी वाली रानी थी' जैसी कविताएँ लिखकर रौशन किया है। राष्ट्रीयवादी चेतना का आह्वान किया और देश में स्वंतत्रता का बिगुल फूंक दिया।

" बुन्देले हर बोलों के मुंह,
,हमने सुनी कहानी थी ।
लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी । "

स्वाधीनता के पश्चात लेखन कार्य में महिलाओं की संख्या तीव्रता से बढी़ । उनसे प्रेरणा ले कर समाज की महिलाओं को अपनी शक्ति का आभास हो चला था । अब महीलाओं को अपनी भविष्य निर्माण के लिए पुरुष पर आश्रित नही, बल्कि स्वयं करनी थी। उन्हीं के कारण देश से शिक्षा का प्रसार, बेरोजगारी में वृद्धि, मानवतावादी, नारीवादी विचार धारा साथ ही महिला आरक्षण कारकों ने महिलाओं में शक्ति का प्रचार किया। उस समय समाज में महिला लेखन में वृद्धि हुई।

अगला नाम मंनु भण्डारी (३ अप्रैल १९३१) जो आधुनिक हिंदी की सुप्रसिद्ध कहानीकार और उपन्यासकार है। देश को अग्रेज़ों से तो आजादी प्राप्त हो गई पर समाज में अभी भी जाति, धर्म, स्त्री- पुरुष में असमानता आर्थिक असमानता जैसे मुद्दे थे। इन्हीं विषयों को अपनी लेखन का मुद्दा बनाया और समाज की आँखें खोलने वाली लेखिका बनी। उन्होंने विवाह टूटने की त्रासदी में घुट रहे एक बच्चे को केंद्रीय विषय बनाकर लिखा गया उपन्यास हिंदी का सबसे सफल उपन्यास "आपका बंटी" है। इसके बाद एक और उपन्यास आम आदमी की पीड़ा और दर्द को उतरने वाली उनकी लेख "महाभोज" नाटक है। यह एक विद्रोह का राजनैतिक उपन्यास है।

" कृष्णा सोबती " भी नारी लेखन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कृष्णा जी ने अपनी लेखन जीवन के यथार्थ को पजांब की मिट्टी से जोड़ते हुए। नारी की स्वतंत्रता और नारी मुक्ति जैसे गभीर विषयों पर प्रश्नों को उठाया है। वे साहित्य जगत में उत्कृष्ट कार्य के लिए हमेशा आपनी लेखों में नए-नए चरित्रों को गढ़ती थी । उनके हर उपन्यास, कथा- कहानियों का चरित्र अपने पहले वाले चरित्र की अपेक्षा आगे निकल जाती है । उनके उपन्यासों को पढ़ने से यहाँ ज्ञात होता है कि सूरजमुखी अंधेरे के तथा ऐ लड़की की लड़की के चरित्र दोनों चरित्र एक-दूसरे से भिन्न है और जिंदगीनामा हिंदी तथा सहित्य के जगत में मील का पत्थर माने जा सकता है। वहीं सूरजमुखी अंधेरे के में अलगाव से जूझती एक महिला की कहानी है, वही जींदगीनामा में पंजाब के समाज का रोजमर्रापन और उसके बीच अपने लिए रास्ता ढूढते इंसानों की टूटी बिखरी कथा है-

" **दोर- डंगर तो कभी- कभार बच्छी- बच्छा देति है , उधार का सूद दिन रात जन्मता- बढ़ता रहता है। "**

उन्होंने भारतीय कथा साहित्य में स्त्री की मन की गांठ खोल देने वाला कथाकार कहाँ जा सकता है। वे अपनी कोशिशों से स्त्रियों की मुक्ति की छटपटाहटों और धर की चारदीवारी से बाहर निकलने की प्रेरणा स्त्रोत बनी । उन्होंने अपनी पारदर्शी सोच से भाषा के माध्यम द्वारा महिलाओं की कल्पना के साचे में डुबो दिया है।

शिवानी का जन्म १७ अक्टूबर १९२३ में निधन २००३ में हुआ था। कहाँ जाता है कि " भारत हिंदी साहित्य पाठकों और लेखकों की रुचि पैदा करके तथा कहानी को केंद्रीय विद्या के रूप में विकासित करनें में उनका अमूल्य योगदान रहा है। उन्होंने अपनी कहानियाँ, उपन्यासों में स्त्री-व्यर्था और स्त्री आवाज़ों को उठाया है। वे अपनी लेखों में स्त्री पात्रों के तकलीफ़ों से अपना तादात्म्य

अनुभाव करती हैं। उन्होंने स्त्री के सभी पहलुओं के बारे में लिखा है। शिवानी का जन्म लगभग सत्तर और अस्सी दशक में हुई थी । उस समय वे एक सशक्त महिला साहित्यकार थी, जो दशक के समाज के भाग- डोर पुरुषों के हाथों में थी। उन्हीं का धर समाज में राज चलता था। शिक्षा और लेखन मे एक स्त्री लेखिका का मुकाम प्राप्त करना अपने आप में ही बहुत गौरव की बात थी और समाज के दुसरी महिलाओं के समक्ष एक उदाहरण के रूप में आई और व्यर्थीत महिलाओं का प्रेरणा स्रोत बनी। उनकी मुख्य कृतियाँ - कृष्णाकली, चौदह फेरे, भैरवी, शमशान आदि। इसी प्रकार हमारे हिंदी साहित्य के जगत मे देश की महिला लेखिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। उनकी यहीं प्रयासों से समाज की महिलाओं को नई दिशा प्राप्त हुई।

मृदुला गर्ग (२५ अक्टूबर १९३८) एक खुले विचारों की महिला थी और अपनी बात को बिना संकोच रखती थी इसलिए सायद कुछ लोगों ने उनके उपन्यासों को अश्लील कहकर उनपर मुकदमा चलाया पर फिर भी उनका कलम चलता रहा।उनकी मुख्य लेख जैसे- उसके हिस्से की धूप, चित्यकोबरा, कंठ गुलाब आदि।

उपर लिखी सभी महिला साहित्यकारों की गहराई से शोध करने से हमारे समकक्ष कुछ नए विचार प्रश्न आते है कि उनकी विषय वस्तु क्या है? उन्होंने लेखन का ऐसा मुद्दा लिया जिन पर लेखन का अधिकार केवल पुरुष ही करते ऐसा धारणाएँ थी पर उन्होंने इस धारणा को गलत साबित किया । किसी भी विषय वस्तु का यथार्थ या रोमांटिक चित्रण इस बात पर आश्रित नहीं होता कि वह पुरूष लिख रहा है या महिला। लेखन तो पूर्णतः चित्रांकन पर निर्भर करती है ना की लिंग पर । लेखन तो मात्र उसके अंकनपर निर्भर करती है। महिला साहित्यकार हर उस विषय पर लिखते है जिस पर बात करना भी वर्जित माना जाता था जैसे स्त्री- पुरूष संबंध, यौन संबंध, नारी स्वंतत्रता आदि ।इन सभी विषयों पर पुरूष ही लेखन रचते अब स्वयं नारी भी इन विषयों में साहित्यिक कृति कर रही हैं। नारी स्वयं अपनी कहानियों को स्वयं कि जुबानी लिख रहीं हैं। खुल कर अपनी जज़्बात समाज के समक्ष रख रही है। मीराबाई, मृदुला गर्ग, महादेवी वर्मा, कृष्णा सोवती जैसे साहित्यकारों के लेखन में काम- निरूपण, खुलेपन, जिंदादिली के कारण ही नारी अपनी स्वंत्रता की ओर कदम बढ़ा रही हैं । नारी शिक्षा को ग्रहण कर शिक्षित हो रही है और आत्मनिर्भर बन पुरूष के समकक्ष खड़ी है। आज नारी किसी भी क्षेत्र में पुरूषों के पीछे आंका नहीं जाती । यही समकक्ष और अंकन दोनों को एक दुसरे का प्रतिस्पर्धी बना दिया है । दिन- प्रतिदिन बराबरी की लड़ाई बढ़ती जा रही है । जिसके कारण पारिवारिक, सामाजिक ढाँचा बिगड़ने लगे, धरों में लड़ाई झगड़े, क्लेश बढ़ने लगे हैं। इन सभी विभागों का प्रभाव अवश्य ही बच्चों पर पढ़ रहीं हैं। बच्चे ही नही सपूर्ण परिवार ही इसके दुष्परिणामों को झेल रही है। परिवार की एकता खंडित हो रही है। सम्मिलित परिवार पूरी तरह बिखराव के कगार पर खड़ी है। बच्चों का भविष्य अन्धकार में ढूब रहीं हैं। नारी अपनी स्वतंत्रता की चाह मे अपनी ही परिवार को दाव पर लगा रही है। नारी अपने परिवार से मुक्त होकर और आर्थिक रूप से समलम्ब हो कर आधुनिकता की ओर कदम बढ़ा रही है और अपने आने वाले नव पीढ़ी को दिशाहीन बना रही है। उस पर अब आधुनिकता के फैशन का प्रेत सवार हुई है, साथ ही साथ वहा अपने आप को उपभोक्तावादी संस्कृति के शिकार होने से स्वयं को वंचित ना रख पाई । इन सभी आधुनिक विसंगतियों की विडंबना को महिला साहित्यकारों ने बड़ी ही मार्मिक रूप से प्रस्तुत किया है।

हमने देखा है की नारी के प्रत्यक्ष यह प्रश्न सबसे जटिल रूप में आता रहा है कि "नारी की मुक्ति कैसे हो? "

"***मुक्त करो नारी को सुसंस्कृत व्यक्ति,***
कैसे होगी
नारी की मुक्ति ?
बधने करो ढीली,

पर
जिसने अपने आप को ही
बंदिशों में है डाली । "

यह प्रश्न बड़ा ही गंभीर मसला है । नारी की आर्थिक सम्पन्नता से और ना ही उसकों उसका अधिकार दे देने से उसकी मुक्ति संभव नहीं हो पा रही है, और ना ही पुरूषों की तरह भान करने से तो उसकी मुक्ति बिल्कुल ही संभव नहीं? तो उनकी मुक्ति का क्या मार्ग है? आज नारी धन की उपार्जन तो कर रहीं हैं परंतु इसके कारण उसे दो गुना खापन पड़ रहीं हैं । एक और आँफिस में दूसरी ओर धर में। इससे हमारे सामने यह प्रश्न भी आती है कि आर्थिक रूप से सम्पन्न स्त्री ने क्या किया ? क्या वास्तव मे उसकी मुक्ति हो पाई ? वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के बाद भी नारी का जीवन बन्दिशों में घिरीं है। साहित्य लेखिकाओं ने पुरूष प्रधान समाज का चित्रण करते हुए नारी की इस हीन दशा के लिए पुरूषों को दोषों ठहराया ही नहीं बल्कि पुरूष मानसिकता को भी स्वीकार कर लिया। इसके पश्चात में इस प्रकृति का स्वयं लेखिकाए विरोध करने लगी । चित्रा मुदगल ने अपने उपन्यास " एक जमीन अपनी " में लिखती है कि- ***" पुरूष विरोध करते हुए, पुरूष की निरकुंश और स्वछन्द हो जाना नारी मुक्ति नही है। "***

नारी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन तो गई, पर अभी भी समानता का अधिकार से वंचित रखा गया, वह लड़ाई लड़ी ही जा रही है। कभी समाज से, तो कभी अपने ही परिवार से तो कभी स्वयं से। "मैत्रेयी पुष्पा" ने अपनी एक कहानी " बेतवा बहती रही " नारी के संधर्ष की इस तरह चित्रित किया- ***" तरह- तरह के मानसिकता वाले दुमुंहे समाज में आज की नारी मात्र प्रर्दशन की वस्तु, सम्पत्ति विनियम की चीज है। "***

समाज के द्वारा नारी को भोग विलास की वस्तु मानना भी लेखिकाओं के लिए लेखन का विषय रहा है। पुरूष प्रधान समाज में पुरूष भेड़िये की तरह घात लगाए नारी का शिकार कर उसके नरम मास को आत्मा से विभिन्न कर देता है। नमिता सिंह अपनी कहानी " अपनी सलीके में लिखती है कि- ***यह जिन्दगी तो जैसे अंधेरे धने जंगल से निकलने वाली पगडंडी का नाम है, कब किधर से कोई बाघ या भेड़िया हमला कर दें । "***

लेखिकाओं के सामने एक और विषय नारी- पुरुष का संबंध भी लेखक का गंभीर विषय के रूप में आता रहा है । साहित्य के कथाओं में पिछले कुछ दशक में नर- नारी के संबंधो की भौतिक एवं दैनिक रूप से बड़ी ही बारीकी से शोध किया जा रहा है। यह लेखन का सबसे रोचक विषय भी रहा है पहले केवल पुरूषों को ही लुभाती थी । अब तो नारी भी इन विषयों को अपनी लेखक का विषय बनतीं है वह बिन सोंच अपनी इच्छाओं को व्यक्त करतीं हैं। बदलते महौल में सामाजिक, आर्थिक, नौटंकी, मानसिक सम्बन्धों ने नर - नारी की पौराणिक राग, शक्ति, काम और प्रेम को भी प्रदूषित कर दिया। नारी अब प्रेम नहीं बल्कि एक भोग की वस्तु मात्र बन कर रह गई। पुरूष उसका अपने जरूरत के अनुसार व्यावहार करते और जरूरत पुरा होने पर घर की एक कोने में भेक देते। इसी सोच को मृदुला गर्ग ने उपन्यास " चित कोबरा" में बड़ी ही निर्भीक बिम्बों में लिखा है। कामुक चर्चा में उनका रूचि बहुत अधिक है इसका प्रभाव उनकी उपन्यासों में दिखाई देता है । वे कहते हैं कि- ***"दांपत्य के बाहर के सम्बन्ध आज भी भारतीय समाज में गलत नज़रिए से देखे जाते हैं ऐसे रिश्तों पर जैसे पूरी सोसाइटी ही न्यायाधीश बन जाती है। प्रश्न ये भी है कि आखिर ऐसे संबंध बनते क्यों है ? "***

उनके स्त्री- पुरुष संबंधों मे कामुक के खुलेपन पर दो टूक विचार व्यक्त होने के कारण उनकी दोनों प्रमुख कृतियाँ चित कोबरा और कंठ गुलाब विवादास्पद भी मानी जाती रही है।

लेखिका ने उपभोक्ता वादी दृष्टिकोण अपनाते हुए आधुनिकता से प्रभावित नारी पात्रों का चित्रण किया है। नारी अपनी जीवन साथी को पति पत्नी की बजाये प्रेमी- प्रेमिका के रूप को अपनाना चाहती है। वही वह पत्नी मे बंधन महसूस करती है। पतिव्रता पर प्रश्न चिन्ह लगती है, मातृत्व का

निषेध करती है। वही आधुनिक नारी पश्चिमी सभ्यता के आकर्षित के बाद ये नारी प्रेमी से छली जाती है। लेखिकाओं ने इस जीवन शैली का पुरजोर विरोध किया है। इसी पर " चित्रा मुदगल" लिखतीं है कि-

"जब ये अव्यवस्थायें मर्दों के लिए अनौतिक, अमानवीय और निरकुशताएं है तो स्त्री के लिए कैसे उचित हो सकती है।"

आज की नारी ना तो छायावादी ना मध्यकालीन और ना ही आदिकालीन नारी की श्रेणी में आती है। वह तो स्वयं में ही परिपूर्ण है। स्वयं आगे बड़ी और ना साथ छोडी़ परिवार की । आज तो हमारे संविधान और कानून ने भी उसको उसका अधिकार प्रदान किया है। जिससे उसका स्वाभाविक जागा है और वह भी अधिकार दृश्य निश्चय के साथ आगे बड़ा रही है। चित्रा मुगल अपनी उपन्यास 'एक जमीन अपनी' में लिखा है कि-

"औरत बोनसाई का पौधा नहीं, जब भी चाहें उसकी जड़ें काटकर उसे वापस गमलों में रोप लिया । वह बोना बनाये रखते की इस साजिश को स्वीकार भी कर सकती है। "

साहित्य लेखिकाओं ने ना केवल अपनी विषयों में विकास का मुद्दा उठाया बल्कि नारी से जुड़ी हर एक विषय को अपना लेखन का आधार बनाया है ।

साहित्य लेखिकाओं ने नारी सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है यह नारी का सबसे प्रबल हिस्सा रहा है । नारी की मुक्ति केवल महिला लेखन तक ही इसका विरमचिन्ह नहीं है यह तो एक व्यापक संगठन का सवाल है। इनकी इन्हीं प्रयासों नई संगठनों को प्रेरणा मिली जिससे वे आगे आए और नारी को परतंत्रता दलदल से बाहर निकाल कर एक शक्त माटी देने का प्रयास किया जा रहा है। जिससे वह अपनी पैरों पर खड़ीं हो सकें ना की पुरूषों के नाम का रस्सी थामें दलदल मे धसने से बचे । लेखन के माध्यम से नारी विकास के लिए किया जा रहे प्रयास नारी के द्वारा नारी विकास सराहनीय है । इन प्रयासों से भले ही बड़े परिवर्तन न हो लेकिन इससे सभी का ध्यान इस तरह गया है। इसके अतिरिक्त नारी स्वयं ही सजर्ग हुई है। अपना महत्व समझने लगी है स्वयं स्वयं के लिए आवाज उठाने लगी। आज की नारी ना तो झुकती है ना डरती है वह बस अपने लक्ष्य की ओर चलती रहती है। इन प्रत्ययों के लिए महिला हिंदी लेखन की अवश्य ही प्रशंसा करना चाहिए। देश के संविधान ने भी नारी अधिकारों को मान्यता प्रदान किया है। इन्हीं अधिकारों की रक्षा के लिए तरह- तरह के कानून बनाए गए है। कानूनों के साथ उनकी समाज और देश में बराबरी का स्थान देने के लिए काई संस्थान एंव अभियान, महिला आयोग , धरेलू हिंसा, महिला आरक्षण, बेटी पढ़ाओ- बेटी बचाओ योजना, महिला राशनकार्ड, महिला हैप्पी लाईन जैसे कार्यक्रम लागू किया। जिससे उनकी एक स्वच्छ महौल देकर हर क्षेत्र में उनकों आगे बढ़या जा सके और देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें। इन सभी प्रयासों से नारी की विकास में गुणात्मक परिवर्तन अवश्य ही होगा और आपेक्षिए है कि हमारे समाज की नारी एक दिन अवश्य ही स्वच्छ महौल में श्वास लेगी। अपनी विकास की मार्ग पर चलते हुए सभी को पीछे छोड़ देगी।

संदर्भ

1. हिंदी, डाॅ॰ अशोक तिवारी, साहित्य, पब्लिकेशन, आगरा।
2. हिंदी साहित्य का इतिहास, डाॅ॰ नरेंद्र, मयूर, पेपर बैक्सटर, नोएडा ।
3. हिंदी उपन्यास का इतिहास, डाॅ॰ गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4. आरोह(हिंदी भाषा) भाग-२ एन. सी.ई .आर.टी. दिल्ली।
5. हिंदी कहानी का इतिहास, डॉ॰ गोपाल राय, राजकमल प्रकाश, दिल्ली।

Smti. Nita Samadder, PhD Scholar & UGC NET
Email: nitaroy29512@gmail.com